नक्सलवाद

70 (1)

भारत को आजाद हुए सत्तर वर्ष से अधिक हो चुके हैं।
लम्बा समय बीत जाने के बाद भी देश प्रगति
प्रगति की राह पर कछुए की चाल से आगे बढ़ रहा है।
दूषित कार्य संस्कृति और बढ़ते नक्सलवाद ने
विशाल जनसंख्या को गतिहीन कर दिया है।
सरकारी तंत्र के सभी स्तर पर भ्रष्टाचार
व्याप्त है और यह उस राष्ट्रीय जीवन का
एक अंग माना जाने लगा है। गरीब व
निःसहाय जनता इससे त्रस्त है। सरकारी
कर्मचारी प्रतिदिन एक नई कमाई से काम
कमाते हैं। ग्रामीण स्कूलों में कई
प्रशासनिक प्रावधान प्राप्त करने के बावजूद
पढ़ाई के लिए नहीं जाते। सरकारी संस्कृति,
वर्क कल्चर भारत के विकास में रोड़ा बनकर
खड़े हैं। भ्रष्टाचार व विकृत संस्कृति से
सुविधा पाना प्राथमिक है।
उदासीनता - इसलिए
वनवासियों की आम के लिए,
केन्द्र का पूरा आम से मुक्त आम के
सत्ता को भ्रष्टाचार से दायित्व बोध आम
लिए ग्रामीण लोगों को प्रमुख आवश्यक गरीब, भूख,
जरूरी है। देश की प्रमुख प्रदूषण है और कुछ
नंगा, बेरोजगार, बीमार, प्रदूषण, बीमारी,
मुहिम लोग उनकी गरीबी, भूख, प्रशासन को प्रभावित करते हैं। विश्व
बेरोजगारी और सामान्य माध्यम बनाते हैं और केवल
सिर्फ आज को सामान्य माध्यम बनाते हैं और प्रतिकूल
की प्रतिक्रिया अपराधी बनाती तो देश में नहीं बचाया
कुछ लोग ही संयम ही तबाह होने से नहीं बचाया
जा सकता। देश को ... जा सकता।

—2—

भ्रष्टाचार के विरुद्ध कई बार आन्दोलन हुए किन्तु सदाचार, शुचिता, दायित्वपूर्ति, कर्तव्यनिष्ठ कार्य संस्कृति पहले की तरह हाशिये पर ही बनी रहीं। भ्रष्टाचार व विकृत कार्य संस्कृति यथावत रहीं। इन अभियानों का राजनीतिकरण होने से आन्दोलन केवल सत्ता प्राप्त करने के लिए कुछ सत्ता दल बदल के आसपास तक सीमित रहे। व्यक्ति बदले परन्तु व्यवस्था नहीं बदली, कार्यपद्धति, कार्य संस्कृति नहीं बदली, शासकों प्रशासकों की भाषा नहीं बदली, व्यवहार नहीं बदला, देश का आम आदमी जहां का तहां, जस का तस बना रहा।

भ्रष्टाचार रूपी राक्षस आतंक फैला रहा है, विकास राशि राजनेताओं, प्रशासन, ठेकेदारों, दलालों कि चौकड़ी की जेब में चली जाती है। प्रजातंत्र के नाम पर परिवार का प्रभुत्व बढ़ रहा है; स्वाभिमान को छोड़कर गुलामी को वरदान मान रहे हैं। भ्रष्टाचार से हमारा देश प्रतिदिन पतन के गर्त में जा रहा है। स्वाभिमान के बजाय हीनता, कुशलता की बजाय गलती, सद्भाव की बजाय कमजोरी, सदाचार के बजाय बेईमान, स्वच्छ के बजाय प्रदूषित, अच्छाई के बजाय कलह, शांति के बजाय हिंसा, सर्वधर्म समभाव के बजाय साम्प्रदायिकता बढ़ रही है। प्रधानमंत्री केन्द्रीय मंत्री से लेकर सामान्य जन तक, पंच लेवल से लेकर चपरासी तक, उद्योगपति से लेकर मजदूर तक भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबे रहे हैं। ऐसा तो प्रतीत होता है आज देश का ही ... है। पहले सेना व न्यायालयों को ईमानदार व देशभक्त माना जाता था परन्तु अब तो न सेनाधिकारी और न्यायाधीश भ्रष्टाचार से बचे हैं। —

उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश वेंकटचलैया ने स्वयं कहा है कि 20 प्रतिशत आज प्रशासनिक व प्रत्येक सेनाधिकारी भ्रष्टाचार के घेरे में फंसे हैं।

सर्वशक्तिमान बनने की कोशिश में सत्ताधीनों ने शोषण एवं भ्रष्टाचार बढ़ा रहा है। देश की सुरक्षा को खिलवाड़ बनाया जा रहा है। पैसे एवं ताकत से चरित्रहीनता हो रहा है। पूंजीवाद के नाते विभाजन के कारण श्रम होते हैं। अमीरपन शुरू हो गई है। प्रशासनिक तानाशाही के लिए सब पुलिस के साधन, धन एवं बल को प्रयुक्त किया है। मूलभूत आवश्यकताओं, रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा के लिए भ्रष्टाचार अनेक रूप धारण कर चुका है। मिलावट, रिश्वत, अनुचित दाम, खराब वस्तु, कम नापतौल, ज्यादा से ज्यादा झूठ बोलना, नकली का पाउडर, नकली दवा देना, दुनिया शुल्क ... चल निकली है। सारा समाज भ्रष्टाचार से संतप्त है। ऐसा लगता है इस भ्रष्टाचार से छुटकारा नहीं पा सकते हैं।

सामूहिक रूप से संकल्पबद्ध होकर लड़ना होगा। बेईमानी, भ्रष्टाचार, घूसखोरी नीचे से चलती है परन्तु ऊपर से आती है। भ्रष्टाचार सभी क्षेत्र की पूर्णता व बेईमानी लाता है। भ्रष्टाचार का अन्त करना होगा है